## पद १७

(राग-झिंजोटी - ताल: दादरा) माणिक चरण कमल युगल मानसीं वसो रे ।।ध्रु. ।। श्रीमाणिक नाम मुखीं गावें। डोळे रूप तेंचि पहावें। देह त्याचे काजीं पडावे।

दृढ हें असो रे।।१।। अन्य निश्चय अन्य देव। चिर्त्ती हें कदा नसावें। माणिक पदीं लीन व्हावें। अंतर नसो रे।।२।। मनोहर म्हणे द्वैतभाव। येणें सत्य होय अभाव। आहे भक्ति भवाब्धिनाव। येणे दु:ख नसो रे।।३।।